# वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 21 242 अंक : 2


## द्रव्यसंग्रह पद्यानुवाद

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

### सप्ततत्त्व-नवपदार्थ अधिकार

द्रवनिर्जरा है कर्म झरना और उसके हेतु जो।
तपरूप निर्मल भाव वे ही भावनिर्जर जानिये।।३६।।
भावमुक्ती कर्मक्षय के हेतु निर्मलभाव हैं।
अर द्रव्यमुक्ती कर्मरज से मुक्त होना जानिये।।३७।।
शुभाशुभपरिणामयुत जिय पुण-पाप सातावेदनी।
शुभ आयु नामरु गोत्र पुण अवशेष तो सब पाप हैं।।३८।।

### मोक्षमार्ग अधिकार

सम्यग्दरशसद्ज्ञानचारित्र मुक्तिमग व्यवहार से।
इन तीन मय शुद्धातमा है मुक्तिमग परमार्थ से।।३९।।
आतमा से भिन्न द्रव्यों में रहें न रतनत्रय।
बस इसलिए ही रतनत्रयमय आतमा ही मुक्तिमग।।४०।।
जीवादि का श्रद्धान समकित जो कि आत्मस्वरूप है।
और दुरभिनिवेश विरहित ज्ञान सम्यग्ज्ञान है।।४१।।
संशयविमोहविभरमविरहित स्वपर को जो जानता।
साकार सम्यग्ज्ञान है वह है अनेकप्रकार का।।४२।।

## समय रहते कल्याण के मार्ग में लग जा !

देखो न ! प्रत्येक पदार्थ अत्यन्त जुदे-जुदे हैं। अहा ! आत्मा ज्ञानानन्द की लक्ष्मी से भरा भगवान है। उसका आश्रय करने से एकसमय में अनन्त गुणों की अनन्त पूर्ण पर्यायें प्रगट होती हैं। वे सब पर्यायें स्वयं से ही प्रगट होतीं हैं तथा इसी रूप में आदि-अनन्तकाल तक प्रगट होती रहती हैं।

निगोद की पर्यायों के उत्पत्तिकाल में भी द्रव्य तो अन्दर वैसा का वैसा ही अनन्त शक्तियों से भरा पड़ा है। पर स्वयं की पहचान न होने से यह दशा हो रही है। यदि अब भी अपने स्वभाव का आश्रय नहीं लिया तो मर कर कहाँ जायेगा? क्या दशा होगी ? जरा कल्पना तो करें।

अज्ञानी जीव के पास जीवन भर की कमाई से दस-बीस लाख की पूँजी हो गई हो तो कमाने का अभिमान करता है और सारी जिन्दगी परिग्रहानन्दी रौद्रध्यान करता है; परन्तु भाई ! यह जीवन हार जाने की बात है। थोड़ी देर के लिए सोचो ह्न ''कदाचित् मरणकाल में पक्षाघात हो जाय, लकवा लग जाय और तुम्हारा विचार बने कि ''मेरी कमाई का थोड़ा बहुत दस-बीस लाख रुपया शुभ काम में भी लग जाय। शेष सारी सम्पत्ति तो कुटुम्बीजन मिल-बाँटकर भोगों में लगायेंगे ही।'' आप इस विचार को बेटों से कहने की कोशिश करेंगे तो पता है ह्न बेटे क्या कहेंगे ? वे समझकर भी ना समझ बनकर बड़े भोले भाव से तुम्हारे शुभचिन्तक बनने का नाटक करते हुए कहेंगे ह्न ''पिताजी ! इस समय आप रुपये-पैसों को याद मत करो। आप तो भगवान का नाम लो। धर्म-ध्यान में उपयोग लगाओ।'' रुपया-पैसा तो हम सब सँभाल लेंगे।

बस, इसी दुविधा में देह छूट जायेगी, प्राण-पखेरू उड़ जायेंगे और जीव पता नहीं कहाँ दुर्गति में जा पड़ेगा ? फिर कौन बाप और कौन बेटा? भाई! सारा जगत इसीप्रकार स्वार्थ का साथी है, नियमसार में तो इस कुटुम्ब कबीले को धूर्तों की टोली कहा है; अतः समय रहते अपने कल्याण के मार्ग में लग ही जाना चाहिए।

**ह्न प्रवचनरत्नाकर, भाग-9, पृष्ठ-375**

## आत्मा योगियों द्वारा जाना गया है

पूज्यपाद आचार्य देवनन्दिस्वामी के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 21 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

**स्वसंवेदनसुव्यक्तस्तनुमात्रो निरत्यय:।**
**अत्यन्तसौख्यवानात्मा, लोकालोकविलोकन: ।।21।।**

आत्मा लोक और अलोक को देखने-जाननेवाला, अत्यन्त अनन्तसुख स्वभाववाला, शरीरप्रमाण, नित्य है तथा स्वसंवेदन से योगिजनों द्वारा अच्छीतरह अनुभव में आया हुआ है।

**(गतांक से आगे)**

विकल्प तो संयोगीभाव हैं और संयोगीभाव स्वभावभाव हो नहीं सकते। अनन्त अनन्त वेहद आनन्द जिसका स्वत: स्वभाव है, उसमें दु:ख दिखाई देता है; परन्तु वह तो क्षणिक है। यहाँ वस्तु स्वरूप बताकर, वस्तु (आत्मा) में आनन्द नहीं माननेवाले सांख्यमत का खण्डन किया है।

पुन: कहते हैं कि स्वयं की लायकात प्रमाण में जो शरीर मिला है, उस शरीर प्रमाण आत्मा है। शरीर प्रमाण होने पर भी स्वयं जुदा है। अरे प्रभु ! तू स्वयं के निजघर को तो जानता नहीं तथा स्वयं के घर की संत महिमा करते हैं, वह भी समझता नहीं। बाद में आत्मा का हित करूँगा ... बाद में करूँगा ऐसा करता रहता है और पूरा भव निकल जाता है। शरीर पलटता है, कर्म पलटता है, पुण्य-पाप का भाव पलटता है; परन्तु वस्तु तो त्रिकाल नित्य है, वह द्रव्यस्वभाव कभी पलटता नहीं – ऐसे अपने स्वभाव की दृष्टि कर तो भव का अंत आवे।

इस गाथा में आत्मा को लोकालोक का ज्ञाता कहकर योगदर्शन का खण्डन किया। अनन्त सौख्यवान कहकर सांख्यमत का खण्डन किया। आत्मा को शरीर प्रमाण कहकर आत्मा को वट का बीज जितना अत्यन्त छोटा माननेवाला अर्थात् वटकणिकामात्र माननेवाले की बात का खण्डन किया तथा आत्मा को नित्य कहकर एक भववाला आत्मा को माननेवाले चार्वाकमत का खण्डन किया। अब स्वसंवेदन की व्याख्या अगली गाथा में करेंगे।

यह इष्टोपदेश नाम का शास्त्र, दिगम्बर जैन आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने रचा है। उसकी 21 वीं गाथा चल रही है।

आत्मा का स्वरूप कैसा है, उस प्रश्न के जबाब में यह गाथा है। आत्मा लोकालोक को जाननेवाला है। लोकालोक है, यह जाना किसने ? उसको जाननेवाला आत्मा का ज्ञानस्वभाव है। यह पहले नक्की करना पड़ेगा। आत्मा शरीर प्रमाण है। शरीर के बाहर आत्मा व्यापता नहीं। आत्मा सदा नित्य है और अनन्त आनन्दमय है। अनन्तसुख से भरा हुआ तत्त्व है। यह आत्मतत्त्व स्वसंवेदनरूप है। स्वयं को स्वयं से जान सके – ऐसा आत्मा का स्वरूप है। देव-शास्त्र-गुरू आदि के निमित्त से या राग की मंदता से जान सके – ऐसा आत्मा का स्वरूप नहीं है।

यहाँ शिष्य को शंका होती है कि प्रमाणसिद्ध वस्तु का गुणगान किया, वह तो बराबर है; परन्तु आत्मा तो अरूपी है, वह ज्ञान में – प्रमाण में सिद्ध हो सके ऐसा लगता नहीं है ; अत: जो प्रमाण में सिद्ध होता नहीं उसका गुणगान क्या ? ऊपर कहे आत्मा के विशेषण प्रमाण से सिद्ध हुए बिना कौन माने ?

शिष्य के प्रश्न के जबाब में पूज्यपादस्वामी कहते हैं कि आत्मा स्वसंवेदन प्रमाण से बराबर जाना जा सकता है। आत्मा ज्ञाता होकर स्वयं को ही ज्ञेय बनाकर ज्ञान में बराबर स्वयं का स्वरूप जान सकता है। पुण्य-पाप का, राग और संयोगों का लक्ष्य छोड़कर शुद्ध, चैतन्यघन, अनाकुल आनन्दस्वरूप में लक्ष्य करता है – ऐसा धर्मीजीव को स्वयं से स्वयं का वेदन होता है। स्वयं ही ज्ञाता होकर स्वयं को ज्ञेय बनावे – ऐसा ज्ञान का स्वरूप है। आत्मा स्वयं ही स्वयं से जानने लायक है। आत्मा स्वयं जाननेवाला तथा जनानेवाला स्वयं ही है; इसकारण आत्मा प्रमाणप्रसिद्ध है।

एक सेकंड के असंख्यवे भाग में लोकालोक को जाननेवाला, नित्य, सुखस्वरूप – ऐसा आत्मा स्वयं के प्रमाणज्ञान में ज्ञात होता है। स्वज्ञेय को ज्ञान में लेकर ज्ञाता बने रहना आत्मा का वास्तविक स्वभाव है। लोकालोक को जानने का आत्मा का स्वत: स्वभाव है। लोकालोक है; इसलिए जानता है – ऐसा नहीं; क्योंकि जानने का आत्मा का स्वयं का स्वभाव है। यदि आत्मा में लोकालोक को जानने की सामर्थ्य न हो तो यह लोकालोक है, यह कौन कह सकता है ? ज्ञानस्वभाव ही ऐसा है कि जो लोकालोक को जान सकता है। जैसे लोकालोक एक सत्ता है, वैसे उसे जाननेवाला ज्ञान आनन्दरूप वस्तु भी एक सत्ता है। अहाहा... ! गजब बात है। **(क्रमश:)**

## णमिऊण जिणं वीरं

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की प्रथम गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

**णमिऊण जिणं वीरं अणंतवरणाणदंसणसहावं।**
**वोच्छामि णियमसारं केवलिसुदकेवली भणिदं ।।**

अनंत और उत्कृष्ट ज्ञान-दर्शन जिसका स्वभाव है – ऐसे केवलज्ञानी और केवलदर्शी जिनवीर को नमन करके मैं केवली तथा श्रुतकेवलियों का कहा हुआ नियमसार कहूँगा।

**(गतांक से आगे .....)**

सीमन्धर भगवान मुनिसुव्रतनाथ के समय में हुए हैं और अभी दीर्घकाल तक रहेंगें। तथा भविष्य की चौबीसी के सातवें तीर्थंकर के समय में वे मोक्ष पधारेंगे। वहाँ बीस तीर्थंकर वर्तमान में विहार कर रहे हैं। उनके समवसरण में चक्रवर्ती, इन्द्र तथा मुनिगण आकर धर्म श्रवण करते हैं। कुन्दकुन्दाचार्य भी वहाँ आठ दिन रहे थे।

लोगों को धर्म की खबर नहीं है। यह ऐसी अपूर्व चीज है कि जो एक सेकण्ड भी धर्म करे तो अनन्त संसार का नाश हो जाए।

मंगलाचरण में जिन्होनें चैतन्य स्वभाव का भान करके मोह-राग-द्वेष को जीत लिया है – ऐसे सर्वज्ञ वीर को नमस्कार किया है।

टीकाकार मुनिराज पद्मप्रभमलधारीदेव गाथा के प्रत्येक पद का तात्पर्य कहते हैं:-

प्रथम ही 'जिन' का अर्थ करते हैं। अनेक जन्मरूप अटवी को प्राप्त कराने के हेतुभूत समस्त मोह-राग-द्वेषादिक को जो जीत लेते हैं वे **जिन** हैं।

राग मेरे कल्याण के लिए अकिंचित्कर है और निमित्त तो मेरे में अत्यन्त अकिंचित्कर है – ऐसा भान करके चैतन्य की श्रद्धा-ज्ञान और एकाग्रता के बल से जिन्होनें मोह-राग-द्वेष को जीत लिया है, वे ही जिन हैं। अनेक जन्मरूपी वनों में भटकाने का कारण मोह-राग-द्वेष हैं। चैतन्य के भान से इनको जो जीत लें, वे ही जिन हैं। ऐसे जिन ही सच्चे देव हैं और वे ही कल्याण में निमित्तरूप होते हैं। ऐसे सर्वज्ञदेव के अतिरिक्त जो कुदेव-कुगुरु को



कल्याण का निमित्त माने, वह मिथ्यादृष्टि है। कुदेव तो राग से लाभ मनवाते हैं अर्थात् कुदेव को मानने वाले ने राग को आदरणीय माना, वह तो अनन्त जन्म-मरण में घुमाने का मूल है।

जो जिन को नमस्कार करता है, वह जीव मोह-राग-द्वेष का आदर नहीं करता। जिसने चैतन्य का भान करके सम्यग्दर्शन से मोह (मिथ्यात्व) को जीत लिया है ऐसी आठ वर्ष की बालिका भी श्रद्धा अपेक्षा से जिन है और उच्च त्यागी द्रव्यलिंगी होकर भी राग से लाभ मानता हो तो वह जिन नहीं; किन्तु मोही है, मिथ्यादृष्टि है। श्रद्धा अपेक्षा चतुर्थ गुणस्थान से ही जिन संज्ञा प्रारंभ हो जाती है। सम्यदृष्टि पक्षी को भी जिन कहते हैं। यहाँ तो जिसने मोह-राग-द्वेष को जीत लिया है, ऐसे पूर्ण जिन की बात है। जहाँ आत्मभान हुआ वहाँ चैतन्य की हुंडी का स्वीकार हो गया। अब चैतन्य में ठहरने में अल्प काल लगेगा।

साधकदशा में पूजा-भक्ति-स्वाध्याय आदि का राग होता है; किन्तु वह मुक्ति का कारण नहीं – ऐसा धर्मी जानता है। जिनने समस्त मोह-राग-द्वेष जीत लिया है; अत: उनको नमस्कार करनेवाला जीव भी मोह-राग-द्वेष को जीतने वाले मार्ग में ही चलनेवाला होता है। मोह-राग-द्वेष को आदरणीय माने, जिन को नमस्कार करनेवाला नहीं हो सकता। सभी तीर्थंकर जिन और वीर हैं; परन्तु यहाँ वर्तमान शासन के नायकरूप में श्री वर्धमान भगवान को नमस्कार किया है।

'वीर' अर्थात् विक्रान्त (पराक्रमी) वीरता प्रगट करे, शौर्य प्रगट करे, कर्म-शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे, वह वीर है।

अपना ध्रुव चैतन्यस्वभाव ही परमतत्त्व है। उसकी प्रतीति करके उसी में स्थिर होना ही सच्चा पराक्रम है। सम्यक्त्व का ऐसा पराक्रम है कि वह किसी भी निमित्त को, राग को अपूर्णता को अपने में अस्तिरूप स्वीकार नहीं करता, ध्रुव चैतन्यतत्त्व को ही प्रतीति में लेता है।

चैतन्य स्वभाव में वीर को लगावे वही सच्चा वीर है। राग में धर्म माने वह वीर नहीं। उसके चैतन्य का पराक्रम प्रगट नहीं हुआ। चैतन्य के पराक्रम से कर्मशत्रुओं पर विजय प्राप्त करे वह वीर है।

वास्तव में जड़कर्मों को जीतना नहीं है और राग को भी जीतना नहीं है। अब अंतर में चैतन्य का पराक्रम प्रगट करके एकाग्र हुआ तब राग की उत्पत्ति ही नहीं होती और कर्म टल जाते हैं अर्थात् कर्मों पर विजय प्राप्त की ऐसा निमित्त से कहा जाता है। वास्तव में तो निमित्त में जीव का कोई पराक्रम ही नहीं; क्योंकि निमित्त तो जीव को स्पर्श ही नहीं करता।

निमित्त तो पर है और पर का स्व में अत्यन्ताभाव है तथा राग का भी आत्मा के मूलस्वभाव में अत्यन्ताभाव है। जब राग में और आत्मा के स्वभाव में ही अनन्त अभाव है तो फिर निमित्त तो कहाँ रह गया ? निमित्त आत्मा में कुछ कर सकते हैं – ऐसा जो

मानता है वह वीतराग की परम्परा से बाहर है। श्री महावीर परमात्मा समस्त मोह-राग-द्वेष को जीतनेवाले हैं; अत: **जिन** हैं और चैतन्य के पराक्रम से कर्मों के विजेता हैं; अत: **वीर** हैं। वे श्री वर्धमान, सन्मति, अतिवीर और महावीर नामों से युक्त हैं। वे भगवान महावीर ही परम ऐश्वर्य अर्थात् केवलज्ञानादि को प्राप्त होने के कारण परमेश्वर हैं। इन्द्र और गणधर देवों के भी देव होने के कारण देवाधिदेव हैं।

वे अंतिम तीर्थनाथ हैं। तीर्थ अर्थात् सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र। जो अपने आत्मा का भान करके तरने का उपाय अपने में प्रगट करे वह तीर्थ है और उसके नाथ महावीर भगवान हैं। स्वयं अपने में तरने का उपाय अपने में प्रगट करे तो निमित्तरूप में भगवान को तीर्थनाथ कहा जाता है। भगवान सकल निर्मल ऐसे केवलज्ञान-दर्शन से संयुक्त हैं। केवलज्ञान-दर्शन कैसा है कि जो त्रिभुवन के सचराचर द्रव्य-गुण-पर्याय से कहे जानेवाले समस्त द्रव्यों को जानने-देखने में समर्थ हैं।

द्रव्य-गुण-पर्याय से समस्त पदार्थों का कथन किया जाता है। धर्म क्या है ? द्रव्य है? गुण है ? या पर्याय है ? इसका भी भान न हो और कहे कि हम धर्म करना चाहते हैं। धर्म तो कौन जाने कहाँ रहता होगा ? शरीर में रहता होगा या आत्मा में ? अभी तो ऐसी शंका में ही पड़ा है।

धर्म तो नवीन उत्पन्न होता है; अत: वह द्रव्य या गुण नहीं, वह तो पर्याय है। जिसकी जो पर्याय हो उसी से वह पर्याय होती है। किसी की पर्याय पर के कारण नहीं होती। धर्म तो आत्मा की निर्दोष शुद्ध पर्याय है। वह आत्मा के आधार से होती है। द्रव्य त्रिकाल है, गुण त्रिकाल हैं और पर्याय क्षणिक है - वह नवीन उत्पन्न होती है। धर्म भी पर्याय है।

जगत में छह प्रकार के द्रव्य हैं। उनमें से जीव और पुद्गल को छोड़कर शेष चार द्रव्य तो अचर अर्थात् स्थिर हैं तथा जीव और पुद्गल यह दो द्रव्य सचराचर हैं। इनमें जीव का स्वभाव तो स्थिर रहने का है; परन्तु हलन-चलन की उसकी पर्याय की योग्यता है। इस प्रकार छहों द्रव्य स्व-स्व द्रव्य-गुण-पर्याय सहित हैं।

इस शरीर के द्रव्य-गुण-पर्याय स्वतंत्र है तथा आत्मा के भी ये तीनों स्वतंत्र हैं। आत्मा अपने ज्ञान की पर्याय से जानता है, आँख से नहीं। इस शरीर में कहीं छिद्र नहीं है कि जिसमें से आत्मा देखे। जैसे वज्र की भीत हो , उसीप्रकार शरीर छिद्ररहित है। अंदर चैतन्यपिण्ड भिन्न है। वह अपने ज्ञानस्वभाव से जानता है। ध्रुव चैतन्यपिण्ड अपनी ज्ञानपर्याय से जानने का काम करता है; किन्तु अज्ञानी को भ्रम है कि मुझे आँख से दिखता है। जैसे मकान में से खिड़की द्वारा देखते हैं, वैसे शरीर में कहीं आँख की खिड़की नहीं है, उसकी रचना तो छिद्ररहित है। चैतन्य निज गुण-पर्याय से स्वतंत्र है । उसके ध्रुव पिण्ड में ज्ञान के क्षयोशमरूप छिद्र है, उसी के द्वारा यह जानता है। **(क्रमश:)**





## शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है, उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है।

उन पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रस्तुत हैं।

**देखो, श्री रामचन्द्रजी ज्ञानी.धर्मात्मा थे; उसी भव में मोक्षगामी थे। रामचन्द्रजी बलदेव थे और लक्ष्मणजी वासुदेव। दोनों भाईयों में परस्पर इतना अपार प्रेम था कि ''रामचन्द्रजी का स्वर्गवास हो गया'' - इतने से शब्द कानों में पड़ते ही ''हाय राम !'' कहते हुए लक्ष्मण के प्राण-पखेरु उड़ गये। फिर रामचन्द्रजी लक्ष्मणजी के मृत शरीर को लेकर छह महीने तक फिरते रहे। अनेकप्रकार से विलाप और प्रलाप करते थे कि - भाई ! कबतक सोते रहोगे ? अब तो उठो, सबेरा हो गया है। जिनेन्द्र भगवान की पूजा का समय जा रहा है। जल्दी उठो ! लक्ष्मणजी के शरीर ( शव ) को कन्धे पर रखकर घूमते हैं; तथापि रामचन्द्रजी उनके साथ किंचित् भी संबंध नहीं मानते थे। स्वभाव के साथ स्व.स्वामी संबंध के अतिरिक्त अन्य किसी के साथ अंशमात्र भी संबंध नहीं मानते थे; किन्तु बाहर से देखनेवाले अज्ञानी जीव धर्मात्मा को ऐसी अन्तर्दृष्टि से देखने की दृष्टि कहाँ से पा सकते हैं ? छह.छह महीने तक उपरोक्तानुसार चेष्टाएँ करते हैं; तथापि उस समय भी लक्ष्मणजी के साथ या उनकी ओर के राग के साथ रामचन्द्रजी स्व.स्वामी संबंध नहीं मानते; उससमय भी अपने ज्ञायक.स्वभाव के आश्रय से जो सम्यग्दर्शनादि वर्तते हैं, उन्हीं के स्वामीरूप से परिणमित होते हैं। धर्मात्मा के हृदय की थाह लेना अज्ञानी के लिए कठिनहै।**

**प्रश्न - यदि रामचन्द्रजी लक्ष्मण के साथ किंचित् संबंध न मानते हों तो छह महीने तक उनके शव को लेकर क्यों फिरते रहे ?**

**उत्तर - अरे भैया ! ज्ञानी निरन्तर अन्तरंग में विवेकसहित हैं। तू रामचन्द्रजी के**

आत्मा को नहीं देखता; इसलिए तुझे ऐसा लगता है कि रामचन्द्रजी छह महीने तक शव को लेकर घूमते रहे। किन्तु ज्ञानी तो कहते हैं कि रामचन्द्रजी ने अपने आत्मा में राग को या लक्ष्मणजी को एक क्षणमात्र भी नहीं उठाया है; चिदानन्दस्वभाव का स्वामित्व छोड़कर एकक्षण भी राग के या पर के स्वामी नहीं हुए हैं। अपने इस शरीर का स्वामी भी वे स्वयं को नहीं मानते। कंधे पर मुर्दा रखा है, उससमय भी आत्मा में सम्यग्दर्शनादि निर्मलभावों को ही उठाया है - उन्ही का स्वामित्व वर्तता है। वर्तमान में जो कुछ दोष हैं, वह श्रद्धा-ज्ञान का दोष नहीं है; चारित्र की कमजोरी का दोष है। उसे हटाना चाहता है; अत: वह दोष गौण है।

देखो, वेदान्त ऐसा कहता है कि ''करे तथापि अकर्ता रहता है ( अनासक्ति से करता है )'' अरे ! ऐसी यह बात नहीं है; उसमें और इस बात में तो आकाश. पाताल का अन्तर है। करना फिर भी अकर्ता रहना यह बात ही परस्पर विरुद्ध है। जो करता है वह कर्ता ही है; रागादि का कर्ता भी हो और ज्ञाता भी रहे - ऐसा नहीं हो सकता। यहाँ तो ऐसी अन्तर्दृष्टि की अपूर्व बात है कि मुझे अपने ज्ञायकस्वभाव के साथ ही स्व.स्वामित्व संबंध है; पर के साथ मुझे संबंध है ही नहीं - ऐसा जानकर ज्ञायकस्वभाव के आश्रय से परिणमित होनेवाला जीव सम्यग्दर्शनादि निर्मलभावों के साथ ही एकत्वरूप से परिणमित होता है; रागादि के साथ एकत्वरूप से परिणमित होकर कर्ता नहीं होता; इसलिए वह अकर्ता है। जो आत्मा के ऐसे स्वभाव को पहिचाने उस धर्मात्मा को देव.गुरु.शास्त्रा का तथा अपने गुण-दोष आदि का यथार्थ विवेक हो जाये, उसे कहीं स्वच्छन्दता या उलझन न हो। धर्मात्मा की दशा बदल जाती है। बाहर से देखनेवाले जीव उसे नहीं जान सकते।

देखो, जब रावण सीता का हरण करके ले जाता है और रामचन्द्रजी उनकी खोज में निकलते हैं उस समय वे वृक्षों और पर्वतों से भी पूछते हैं कि हे वृक्ष ! तुमने मेरी सीता को देखा है ? हे पर्वत ! तुमने कहीं जानकी को देखा है ? देखी हो तो मुझसे कहो। और उस समय अपने ही शब्दों की प्रतिध्वनि से उन्हें ऐसा लगता है कि पर्वत ने उत्तर दिया है। ऐसी दशा के समय भी रामचन्द्रजी ज्ञानी.विवेकी. ध र्मात्मा हैं; अन्तर्दृष्टि में सीता का या सीता के प्रति राग का स्वामित्व नहीं मानते; किन्तु ज्ञान के ही स्वामीरूप से परिणमित होते हैं। यद्यपि ऐसे उपयोग में निरन्तर नहीं रहते; किन्तु ऐसा परिणमन तो निरन्तर है ही।



मेरे आत्मा की संबंधशक्ति ऐसी है कि निर्मलभाव ही मेरा स्व है और उसका मैं स्वामी हूँ; किन्तु सीता मेरा स्व और मैं उसका स्वामी - ऐसा संबंध मेरे स्वभाव में नहीं है। ऐसा वे जानते हैं। अज्ञानी को स्त्राी आदि का वियोग होने पर कदाचित् वह खेद न करे और शुभराग से सहन कर ले, किन्तु उसके अभिप्राय में ऐसा है कि ''यह राग मेरा स्व और मैं उसका स्वामी'' अथवा ''स्त्राी मेरी थी और वह चली गई; फिर भी मैंने सहन कर लिया'' - इसप्रकार उसका अभिप्राय ही मिथ्या है; उसके अभिप्राय में अनन्त राग और स्त्राी का अनन्त स्वामित्व पड़ा है। ज्ञानी को शोक परिणाम हों उस समय भी ''मैं ज्ञायक हूँ'' - ऐसी दृष्टि नहीं छूटती; इसलिए सारे जगत का और विकार का स्वामित्व उसे छूट गया है। स्वभाव से जो निर्मल पर्याय प्रगट हुई वह ''स्व'' और आत्मा स्वयं उसका स्वामी - इसप्रकार अन्तिम संबंधशक्ति में द्रव्य.पर्याय की एकता बतलाकर आचार्यदेव ने 47 शक्तियाँ पूर्ण की हैं। स्वयं अपने स्वभाव के साथ संबंध रखकर स्वभाव के साथ एकतारूप से परिणमित हो - ऐसा आत्मा का स्वभाव है और उसी में आत्मा की शोभा है। आत्मा स्वयं अपने स्वभाव में एकता करके सम्यग्दर्शन.ज्ञान.चारित्रारूप से परिणमित हो उसमें आत्मा की शोभा है; परन्तु पर के संबंध से आत्मा को बतलाना उसमें आत्मा की शोभा नहीं है। इसलिए हे जीव ! पर का संबंध तोड़कर अपने ज्ञायकस्वभाव में ही एकत्व कर ! ज्ञायकस्वभाव में एकता करके जो सम्यग्दर्शन. ज्ञान.चारित्रा प्रगट हुए वह तेरा स्व.स्वभाव है और तू ही उसका स्वामी है, इसके अलावा अन्य किसी के साथ तुझे स्व.स्वामी संबंध नहीं है।

इसप्रकार यह संबंधशक्ति अपने स्वभाव के साथ ही संबंध ( एकता ) कराके पर के साथ का संबंध छुड़वाती है और स्वभाव के साथ एकता करके पर के साथ का संबंध तोड़ने पर विकार के साथ का संबंध भी छूट जाता है। इसप्रकार अकेले शुद्धभाव के साथ ही स्व.स्वामिपना है, विकार के साथ स्व.स्वामिपना नहीं है। स्वभावोन्मुख होकर एकाग्र हुआ वहाँ आत्मा स्वयं ही अपने शुद्धभाव का ही स्वामी है। अज्ञानी जीव ने अपने स्वभाव के साथ एकतारूप से संबंध करके अभी तक उसका स्वामित्व कभी नहीं किया है, पर का स्वामित्व माना है। यदि इस ''स्वभावमात्र स्व-स्वामित्वरूप संबंधशक्ति'' को जाने तो पर के साथ संबंध ा तोड़ दे और स्वभाव में एकता रूप स्व.स्वामित्व संबंध बनाये। (क्रमश:)

# ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

**प्रश्न :** सम्यग्दृष्टि के तीन कषाय विद्यमान हैं, उसे नर्क में विशेष दु:ख है कि स्वर्ग में ?

**उत्तर :** वास्तव में तो स्वर्ग-नर्क के संयोग का दु:ख नहीं है; किन्तु अपने परिणाम कषाय में जब जुड़ते हैं, तब उससे दु:ख होता है। नर्क विशेष दु:ख का कारण हो - ऐसा नहीं है; किन्तु प्रतिकूलता में तीव्र जुड़ान होता है, उसका विशेष दु:ख है। जितना पर में लक्ष्य जाता है, उतना दु:ख है। वह दु:ख का परिणाम संयोग के कारण नहीं हुआ है; किन्तु अपने से ही हुआ है।

**प्रश्न :** चौथे गुणस्थान में तत्त्वार्थश्रद्धान को सम्यक् कहा है, चारित्र को नहीं कहा ?

**उत्तर :** चारित्र की पर्याय पाँचवे-छठे गुणस्थान से मुख्यतया मानी जाती है। चौथे वाले को स्वरूपाचरण चारित्र प्रगट हुआ है।

**प्रश्न :** चौथे गुणस्थान में अनुभव भी होता या अकेली श्रद्धा ही होती है ?

**उत्तर :** चौथे गुणस्थान में आनन्द के अनुभव सहित श्रद्धान होता है।

**प्रश्न :** सम्यग्दृष्टि निर्विकल्प होता है, तभी आनन्द का अनुभव करता होगा, शेष काल तो प्रमाद में ही जाता होगा ?

**उत्तर :** सम्यग्दृष्टि सदाकाल शुद्धता में ही वर्तता है। भले निर्विकल्प उपयोग न हो और राग में प्रवृत्ति करता हो, खाना-पीना सोना अथवा पूजा-भक्ति-श्रवण आदि बाह्य उपयोग में - राग में वर्तता हो, तो भी उस समय शुद्धता में ही वर्त रहा है। अन्तर्दृष्टि तो स्वभाव में ही पड़ी है, इसलिए रागरूप प्रवृत्ति होने पर भी उस राग को दृष्टि के जोर में परिगणित नहीं किया जाता; इसलिए सम्यग्दृष्टि सदाकाल अनुभूति में ही वर्तता है, शुद्धतनारूप ही वर्तता है - ऐसा कहने में आता है। सम्यग्दृष्टि स्वरूप में ही जाग्रत हुआ है, वह तो निरन्तर जाग्रत ही है। श्रेणिक आदि नरक में हैं, वे भी शुद्धपने में ही वर्त रहे हैं, राग में नहीं। राग आता है, उसे जानते हैं; किन्तु उसमें वर्तते नहीं।

**प्रश्न :** सम्यग्दृष्टि का उपयोग पर में हो, तब स्वप्रकाशक है क्या ?

**उत्तर :** सम्यग्दृष्टि का उपयोग पर में हो, तब भी स्वप्रकाशक है; परन्तु उपयोगरूप पर-प्रकाशक के काल में उपयोगरूप स्व-प्रकाशक नहीं होता और जब उपयोगरूप स्व-प्रकाशक हो, तब उपयोगरूप पर-प्रकाशक नहीं होता; किन्तु ज्ञान का स्वभाव तो स्व-पर प्रकाशक ही है।



**प्रश्न :** यदि राग से परद्रव्य में कोई फेरफार नहीं कर सकते तो ज्ञानी जीव परद्रव्य में फेरफार करने का राग क्यों करता है ?

**उत्तर :** राग से तो परद्रव्य में परिवर्तन - फेरफार हो सकता ही नहीं; फिर भी ज्ञानी को निर्बलता से राग आता; तथापि उस राग का वह कर्ता नहीं होता, उसको ज्ञेय बनाकर ज्ञाता रहता है।

**प्रश्न :** ज्ञानी सारे दिन शास्त्र-वाँचन, उपदेशादि करता हुआ दिखाई देता है; तो भी आप कहते हो कि ज्ञानी राग को नहीं करता, इससे क्या समझना चाहिए ?

**उत्तर :** राग आता है अवश्य; किन्तु ज्ञानी तो उस राग का मात्र जाननेवाला है। आत्मा को जानता होने से स्व-पर प्रकाशक ज्ञान समय-समय पर होता है और उसी समय जो राग होता है, उसको भी जानता है, फिर भी उस राग का स्वामी नहीं होता। ज्ञानी राग को परज्ञेयरूप से जानता है। वास्तव में उस राग संबन्धी जो अपना ज्ञान है, उस ज्ञान को ही जानता है। ज्ञान में राग निमित्त है; किन्तु राग का ज्ञान अपने में अपने से हुआ है और वह अपना कार्य है तथा उस समय होनेवाला राग वह अपना कार्य नहीं है - ऐसा ज्ञानी जानता है।

**प्रश्न :** ज्ञानी को राग होता दिखाई देता है, तथापि ज्ञनी को राग नहीं होता - ऐसा कथन किस अपेक्षा से है ?

**उत्तर :** ज्ञानी को अल्प राग-द्वेष होता है। उसमें एकत्वबुद्धि नहीं होती, इसलिए वह गिनती में नहीं है। ज्ञानी जीव पर के कारण राग मानता नहीं, स्वभाव में से राग आता नहीं, जो राग होता है, उसमें एकता मानता नहीं; अपने स्वभाव को राग से भिन्न ही मानता है, अनुभवता है; इसलिए ज्ञानी के वास्तव में राग होता ही नहीं, उसके तो स्वभाव की एकता ही बढ़ती है।

**प्रश्न :** ज्ञानी का ज्ञान स्व तथा पर दोनों को जानता है, तो भी उसका ज्ञानोपयोग स्व में स्थिर न रहकर पर की तरफ जाता है। यह दोष वास्तव में ज्ञान का है या नहीं ?

**उत्तर :** पर में उपयोग के जाते समय ज्ञानी के ज्ञान की सम्यक्ता का अभाव होकर मिथ्यापना तो होता नहीं - इस अपेक्षा से ज्ञानी के ज्ञान में दोष नहीं है; परन्तु अभी ज्ञान ने केवलज्ञानरूप परिणमन नहीं किया है, वह दोष तो ज्ञान का ही है; क्योंकि ज्ञान का स्वभाव तो केवलज्ञानरूप होने का है। अत: जबतक ज्ञान केवलज्ञानरूप परिणमन न करे, तबतक वह सदोष है, सावरण है, मिथ्या न होने पर दोषी तो है। उपयोग भले स्व में हो, फिर भी पूर्ण केवलज्ञानरूप से परिणमन नहीं किया, वह दोष तो ज्ञान का ही है। ऐसा होने पर भी उस समय जो राग है, वह कहीं ज्ञानकृत नहीं है - राग तो चारित्र का दोष है।

## समाचार दर्शन –

### श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित - 26 वाँ शिक्षण-शिविर और राज्यपालजी का अभिनन्दन

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 27 जुलाई से 5 अगस्त तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा आयोजित 26वें बृहत आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी जैन के करकमलों से दिनांक 27 जुलाई को प्रातः 9.00 बजे सम्पन्न हुआ।

पण्डित शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा श्री निर्मलचन्दजी जैन का परिचय दिया गया, तदुपरान्त

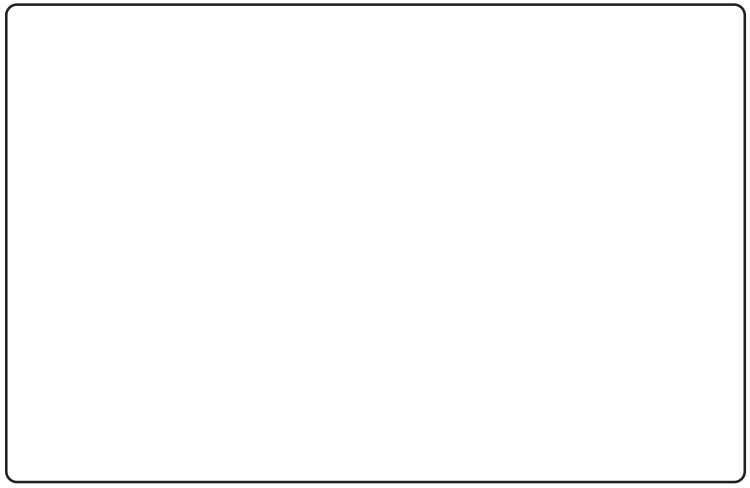

राज्यपाल को प्रशस्ति भेंट करते हुए डॉ. भारिल्ल, साथ में हैं श्री नरेशकुमारजी सेठी

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने श्री निर्मलचन्दजी जैन का तिलक लगाकर, आत्मार्थी ट्रस्ट, दिल्ली के अध्यक्ष श्री विमलकुमारजी जैन ने माल्यार्पण, दिग. जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के अध्यक्ष श्री नरेशकुमारजी सेठी ने शाल, श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसंन्तभाई एम. दोशी ने श्रीफल तथा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा प्रशस्ति भेंटकर अभिनन्दन किया गया। प्रशस्ति का वाचन स्वयं डॉ. भारिल्ल ने किया।

इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत से पधारे 42 विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों द्वारा महामहिम राज्यपाल श्री निर्मलचन्दजी का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। साथ ही श्री निर्मलचन्दजी जैन की धर्मपत्नी श्रीमती रोहिणी जैन को श्रीमती कमलाजी भारिल्ल द्वारा तिलक, श्रीमती स्वयंप्रभा गदइया एवं श्रीमती विमला वैद द्वारा माल्यार्पण तथा श्रीमती गुणमाला भारिल्ल द्वारा शाल उड़ा कर अभिनन्दन किया गया।



उद्घाटन समारोह के अवसर पर ही **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल और उनका कथा साहित्य** विषय पर अरुणकुमार जैन द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय की एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा के पंचम पत्र के रूप में लिखे गये शोध प्रबन्ध का विमोचन किया गया। अन्त में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने आभार प्रदर्शन किया।

सभा का संचालन बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री ने किया।

उद्घाटन सभा के पूर्व श्री मोतीचन्दजी लुहाड़िया जोधपुर एवं श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार किशनगढ़ द्वारा झण्डारोहण तथा शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री अजितप्रसादजी दिल्ली एवं श्री महेन्द्रकुमारजी सेठी जयपुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर देश-विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने प्रातः एवं रात्रि में प्रवचनसार की 79 से 85 गाथाओं के आधार पर दर्शन मोह एवं चारित्र मोह का स्वरूप एवं उनके नाश का उपाय विशेषरूप से स्पष्ट किया।

इसके अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल', पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित.देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, पण्डित अनिलकुमारजी भिण्ड, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री, जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। साथ ही दोपहर की व्याख्यानमाला में प्रतिदिन क्रमशः डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, पण्डित जयकुमारजी बारां, पण्डित कमलकुमारजी पिड़ावा, डॉ. भागचन्दजी शास्त्री जयपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री लोनी-दिल्ली, पण्डित देवेन्द्रकुमारजी सिंगोड़ी, पण्डित गुलाबचन्दजी जैन बीना एवं पण्डित अशोककुमारजी जैन सिरसागंज के विविध विषयों पर हुये प्रवचनों का लाभ मिला।

**श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट सलाहकार बोर्ड का अधिवेशन –** शुक्रवार, दिनांक 1 अगस्त 2003 को दोपहर 2.00 बजे सम्पन्न हुआ। इसका विस्तृत समाचार जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशित हो चुका है।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने सभा को मार्मिक उद्बोधन दिया। श्री वसन्तभाई एम. दोशी ने अपने वक्तव्य में संस्था द्वारा तीर्थक्षेत्रों व स्वाध्याय भवन हेतु 10 लाख 31 हजार रुपये के अनुदान का विवरण दिया तथा आर्थिक स्तर पर कमजोर साधर्मियों के लिये वैद्यकीय एवं शैक्षणिक सहायता की योजना की चर्चा की।

अध्यक्षीय भाषण में श्री धन्यकुमारजी बेलोकर ने संस्था को दिये गये आर्थिक सहयोग के लिये समाज के प्रति आभार व्यक्त किया एवं सभी प्रकार से सेवायें देते रहने की घोषणा की।

अन्त में ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। सभा का संचालन पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन ने किया।

इस प्रसंग पर तीनलोक मंडल विधान का आयोजन श्री बाबूलाल सुखलाल पंचोली परिवार थांदला तथा स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी एवं सुपुत्र श्री अशोककुमारजी पाटनी परिवार कोलकाता द्वारा किया गया।

शिविर में योगसार (मराठी), जिनेन्द्र-अष्टक (मराठी), इष्टोपदेश, समाधितन्त्र, सम्यग्दर्शन, एवं डॉ. भारिल्ल और उनका कथा साहित्य का भी लोकार्पण किया गया।

दिनांक 4 अगस्त को संक्षिप्त समापन के तौर पर महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिविर की समस्त गतिविधियों का विवरण प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर 49 हजार 750 रुपये का नकद एवं 90 हजार 253 रुपये का उधार इसतरह कुल 1 लाख 40 हजार 3 रुपये का सत्साहित्य एवं 22 हजार रुपये के (670 घंटे के औडियो एवं 675 घंटे के वीडियो, इस प्रकार कुल 1345 घंटे के )प्रवचनों के कैसिट बिकीं। वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बने। सम्पूर्ण आयोजन में 1242 आत्मार्थी बन्धुओं ने धर्मलाभ लिया।

## पर्यूषण पर्व के अवसर पर कौन-कहाँ

***पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है; जिनकी सूची यहाँ दी जा रही है। दिनांक 8 अगस्त 2003 तक 447 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं। अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण आ रहे हैं। दिनांक 8 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार महाराष्ट्र में 79 , राजस्थान में 78 ,मध्यप्रदेश में 116, उत्तरप्रदेश में 38, गुजरात में 19, तमिलनाडु, कर्नाटक, हरियाणा, बिहार, पश्चिम बंगाल एवं केरल में 16, दिल्ली में 40, जयपुर में 20 इसप्रकार कुल 418 स्थानों पर ही विद्वान भेजना संभव हो सका है । ध्यान रहे, इनमें 236 स्थानों पर तो पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं। जयपुर एवं शेष निश्चित स्थानों की सूची आगामी अंक में प्रकाशित की जायेगी।***

***विशिष्ट विद्वान:*** **1.कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', **2.जयपुर (आदर्शनगर):** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल, जयपुर, **3.जयपुर** (टोडरमल स्मारक) **:** पं. रतनचंदजी भारिल्ल, जयपुर, **4.टीकमगढ :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद, **5. नांदेड (वि.नगर) :** पं. पूनमचंदजी छाबडा, इन्दौर, **6.बड़ौत :** ब्र.यशपालजी जैन, जयपुर, **7.बैंगलोर :** डॉ. उत्तमचंदजी, सिवनी, **8.मुम्बई (दादर) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री, छिन्दवाड़ा **9.मुम्बई (मलाड) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन, **10.सहारनपुर :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री, खनियाँधाना, **11.कोटा (रामपुरा) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियाँधाना, **12.विदिशा (किला-अन्दर) :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल', छिन्दवाडा, **13. देवलाली :** पं. राजेंद्रकुमारजी, जबलपुर, **14.इन्दौर (तिलकनगर) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल', भोपाल, **15.जबलपुर :** पं. शांतिकुमारजी पाटील, जयपुर, **16.मुम्बई (बोरीवली) :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी, उज्जैन, **17.अकोला :** पं. हरकचंदजी बिलाला, अकोला, **18.अलीगढ :** पं. अशोकजी लुहाडिया, **19.कोलकाता :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम', देवलाली।

***विदेश में :*** **20.शिकागो :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, मुम्बई ।

***महाराष्ट्र प्रान्त :*** **२१ मुंबई(घाटकोपर) :** पं.श्री प्रकाशचंदजी झांझरी, उज्जैन **22. मुंबई(भायं. वेस्ट) :** पं.श्री रजनीभाईजी दोशी, हिम्मतनगर **२३. मुंबई(सीमं. जिना.) :** पं.श्री शैलेशभाईजी शाह, तलोद **२४. मुंबई(भूलेश्वर रोड) :** पं.श्री सुशीलकुमारजी जैन, इन्दौर, **२५. नातेपुते** : पं.धन्यकुमारजी भोरे, कारंजा **२६. मलकापुर :** पं.श्री राजमलजी जैन, भोपाल **२७. देवलगाँवराजा :** पं.श्री जीवरावजी जैन, नासिक **२८. रामटेक :** पं.श्री गेंदालालजी जैन, रामटेक **२९. नागपुर :** पं.श्री अरहंतप्रकाशजी झांझरी, उज्जैन **३०. कारंजा(लाड) :** पं.श्री रमेशचंदजी शास्त्री, जयपुर **३१. अहमदनगर :** पं.श्री केशवरावजी जैन, नागपुर **३२. वाशिम(जवाहर कॉ.):** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, गोहद, **३३. सोलापुर :** पं.श्री फूलचंदजी मुक्कीरवार, हिंगोली **३४. सोलापुर :** विदुषी मंजुषाजी मुक्कीरवार, हिंगोली **३५. पुसद :** पं.श्री नंदकिशोरजी मांगुलकर, शास्त्री **३६. सावदा :** पं.श्री विजयकुमारजी राऊत, रीठद **३७. फालेगाँव :** पं.श्री दिलीपजी महाजन, वाशिम **३८. निवघा :** पं.श्री अशोकजी वानरे, सेलू **३९. लासूर्णे :** पं.श्री विजयसेनजी पाटील, आलते **४०. गजपंथा :** पं.श्री राजुभाईजी जैन, कानपुर **४१. हिंगोली :** पं.श्री धर्मेन्द्रजी शास्त्री, बण्डा, **४२. औरंगाबाद :** पं.श्री अभिनवजी शास्त्री, मैनपुरी **४३. वर्धा :** पं.श्री विपिनकुमारजी शास्त्री, फिरोजाबाद **४४. पुणे(चिंचवड) :** पं.श्री जितेंद्रकुमारजी शास्त्री, पारशिवनी **४५. मुंबई(मलाड) :** विदुषी समताजी झांझरी, उज्जैन **४६. वसमतनगर :** पं.श्री राजूजी काले, रीठद **४७. बेलोरा :** पं.श्री अभिनंदन पाटील, **४८. अकलूज :** पं.श्री संतोषजी मिणचे **४९.माळशिरस :** पं.श्री जितेन्द्र चौगुले, **५०. नागपुर :** पं.श्री मधुकरजी गडेकर **५१.हिंगोली :** पं.श्री पद्माकरजी दोडल **५२. हिंगोली :** पं.श्री जयकुमारजी दोडल **५३. सांगली :** पं.श्री महावीरजी पाटील **५४. नवलूर :** पं.श्री बाहुबलीजी भोसगे **५५. वसमतनगर :** पं.श्री नेमीचंदजी महाजन **५६. लोणावला :** पं.श्री गोकुलचंदजी जैन **५७. पानकन्हेरगाँव :** पं.श्री अशोकजी मिरकुटे **५८. मुंबई :** पं.श्री अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल **५९. मुंबई (एवरशाईननगर) :** पं.श्री विपिनकुमारजी शास्त्री **६०. मुंबई(अणुशक्तीनगर) :** पं.श्री संतोषकुमारजी जैन **६१. मुंबई(चेंबूर) :** पं.श्री सुमेरचंदजी बेलोकर **६२. मुंबई :** पं.श्री मणिभाईजी, मुनई **६३. मुंबई :** पं.श्री रूपेशजी शास्त्री, बैतुल **६४. देवलगाँवराजा :** पं.श्री उमाकांतजी बंड, शास्त्री **६५. देवलगाँवराजा :** पं.श्री विजयकुमारजी आव्हाने, शास्त्री **६६. चिखली :** पं.श्री देवलालजी जैन **६७. नागपुर :** पं.श्री मनोहरजी मारवडकर **६८. नातेपुते :** पं.श्री शितलचंदजी दोशी **६९. जयसिंहपुर :** पं.श्री पार्श्वनाथजी कुगे **७०. वर्धा :** पं.श्री राजेन्द्रजी भागवतकर **७१. एलोरा :** पं.श्री गुलाबचंदजी बोरालकर, शास्त्री **७२. एलोरा :** पं.श्री प्रदीपजी माद्रप, शास्त्री **७३. औरंगाबाद :** पं.श्री कल्याणमलजी गंगवाल **७४. बाहुबली :** पं.श्री नेमीनाथजी बालीकाई, शास्त्री **७५. कचनेर :** पं.श्री संजयजी राऊत, शास्त्री **७६. औरंगाबाद :** पं.श्री सचिन पाटनी शास्त्री, कन्नड **७७. सोलापुर :** पं.श्री नितिनजी कोठेकर, शास्त्री **७८. शिरडशहापुर :** पं.श्री प्रशांतजी काले, शास्त्री, **७९. डासाला :** पं.श्री अतुलजी शास्त्री, देवडिया, **८०. नागपुर :** पं.श्री प्रयंकजी शास्त्री, रहली, **८१.पंढरपुर:** पं.श्री प्रशांतजी शास्त्री, मौ **८२.वाशिम(चन्द्र. मं.) :** पं.श्री धर्मेशजी शास्त्री, रैयाना, **८३.सेलू :** पं.श्री विकासजी कंधारकर, **८४.शिरपुर :** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, डडूका, **८५.मोताला :** पं.श्री विकासजी शास्त्री, बानपुर, **८६.मुळावा :** पं.श्री सत्येन्द्र मिरकुटे, **८७. मालेगाँव :** पं.श्री सुदीप कान्हेड, **८८.सेनगाँव :** पं.श्री रविन्द्र काले, कारंजा, **८९.चिखली :** पं.श्री दिग्विजय आलमान, **९०.बीड :** पं.श्री अश्विन नानावटी, **९१.मुंबई :** पं.श्री प्रकाश जैन,**९२.मुंबई(भायन्दर):** पं.श्री अनिल जैन।

amOñWmZ àmÝV ... ९३. **उदयपुर(से.११) :** पं.श्री तेजमलजी गंगवाल, इन्दौर ९४. **उदयपुर(मु.म.) :** पं.श्री जगदीशजी पवार, उज्जैन ९५.**उदयपुर(स. भ):** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, शाहगढ़, ९६. **उदयपुर(के.न.):** पं.श्री मनीषकुमारजी शास्त्री, देवलाली ९७. **उदयपुर(से. ५):** पं.श्री कमल कुमारजी मलैय्या, जबेरा ९८. **पिसांगन :** पं.श्री कमलेशकुमारजी शास्त्री, मौ ९९.**बिजौलियाँ:** पं.श्री महेन्द्रजी जैन, सागर १००. **पिडावा :** पं.श्री जयकुमारजी जैन, बांरा १०१. **भीण्डर :** पं.श्री धर्मचंदजी जैन, जयथल १०२. **जौलाना :** पं.श्री लक्ष्मीचंदजी जैन, डूँगरपुर १०३. **बून्दी :** पं.श्री डूँगरमलजी जैन, सेमारी १०४.**कूँण** पं.श्रीकुन्दनमलजी जैन, पथरिया १०५. **डूँगरपुर(पत्र.कॉ):** पं.श्री ऋषभकुमारजी जैन, इन्दौर १०६. **भीलवाडा :** विदुषी ब्र. विमलाबहनजी, जबलपुर १०७.**अजमेर :** पं.श्री बिपिनकुमारजी शास्त्री, श्योपुरकलाँ १०८.**कुशलगढ (तेरापंथी मंदिर) :** पं.श्री परेशकुमारजी शास्त्री, बांसवाडा १०९. **बीकानेर :** पं.श्री कैलाशचंदजी जैन, मोमासर ११०. **थानागाजी :** पं.श्री राजीवकुमारजी शास्त्री, भिण्ड १११. **डूँगरपुर :** पं.श्री रीतेशजी शास्त्री, डडूका ११२. **अलीगढ :** पं.श्री रमेशजी मोदी, सागर ११३. **झालावाड:** पं.श्री सुनीलजी जैन, प्रतापगढ ११४.**उदयपुर :** पं.श्री देवीलालजी मेहता कोटा ११५. **बांसवाडा :** पं.श्री राजकुमारजी शास्त्री ११६. **निम्बाहेडा :** पं.श्री सुनिलजी नाके ११७. **कुचामनसिटी :** पं.श्री राकेशजी शास्त्री, लिधौरा ११८. **बून्दी :** पं.श्री संजयजी सिंघई, सागर ११९.**सुजानगढ :** पं.श्री अरविंदजी सिंघई १२०. **रूपाहेडीकलाँ :** पं.श्री पद्माकरजी मुंजोले, शास्त्री १२१. **अलवर :** पं.श्री अजितजी शास्त्री १२२. **अलवर :** पं.श्री प्रेमचंदजी शास्त्री १२३. **अलवर :** पं.श्री अरूणजी बंड, शास्त्री १२४. **अलवर :** पं.श्री नेमीचंदजी शास्त्री १२५. **प्रतापगढ :** पं.श्री सज्जनलालजी सावरिया १२६. **कोटा :** पं.श्री प्रेमचंदजी बजाज १२७. **किशनगढ :** पं.श्री पवनजी शास्त्री, शहपुरा १२८. **टामटीया :** पं.श्री प्रमोदकुमारजी जैन, शास्त्री १२९. **उदयपुर :** पं.श्री कन्हैयालालजी जैन १३०. **भीण्डर :** पं.श्री छोगामलजी जैन १३१. **भैसरोडगढ़ :** पं.श्री संजयजी जैन १३२. **जयपुर (जवाहरनगर) :** पं.श्री पीयूषजी शास्त्री, जयपुर १३३. **जयपुर :** पं.श्री दिनेशजी जैन, शास्त्री १३४. **जयपुर :** पं.श्री श्रुतेशजी सातपुते, शास्त्री १३५. **जयपुर :** पं.श्री अमोल संघई, शास्त्री १३६. **जयपुर :** पं.श्री भागचंदजी शास्त्री, बडागाँव १३७. **जयपुर :** पं.श्री नवीनजी पोद्दार, १३८. **कुचामन सिटी :** पं.श्री जयप्रकाशजी गांधी १३९. **जयपुर :** पं.श्री प्रवीण जैन शास्त्री १४०. **कानौड :** पं. चन्द्रप्रभातजी शास्त्री, बड़ामलहरा, १४१.**कुरावड :** पं. श्री सुनील शास्त्री शाहगढ़, १४२.**प्रतापगढ(माणक चौक) :** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, शहपुरा १४३.**अकलेरा :** पं.श्री सुरेन्द्रजी शास्त्री, शाहगढ १४४. **उदयपुर (सेक्टर-३):** पं. सौरभजी शास्त्री शाहगढ १४५. **लकड़वास :** पं. अतुलजी शास्त्री, कोलारस, १४६.**उदयपुर (आ. नगर):** पं. राजेशजी शास्त्री, गुढा, १४६.**पीसागंन :** पं.श्री अमित जैन, लुकवासा, १४७.**साकरोदा :** पं.श्री अनंतवीर जैन, फिरोजाबाद, १४८.**चित्तौड़गढ :** पं. देवेन्द्र जैन, अकाझिरी, १४९.**लांबाखोह :** पं.श्री नितिन जैन, अहमदाबाद, १५०. **टोकर :** पं.श्री निखिल जैन, बण्डा, १५१.**प्रतापगढ :** पं.श्री रीतेश जैन, अहमदाबाद, १५२.**बेंगू:** पं.श्री सुदीप जैन, बरगी, १५३.**देवली:** पं.श्री सचिन्द्र जैन, गढाकोटा, १५४.**डबोक :** पं.श्री वरूण शाह, मुंबई , १५५. **केलवाडा :** पं.श्री विक्रान्त पाटनी, झालरापाटन, १५६.**वल्लभनगर :** पं.श्री वीरेन्द्र जैन, बरा, १५७.**तालेडा :** पं.श्री अनेकान्त जैन, १५८.**वैर(भरतपुर):** पं.श्री आशीष जैन, कोटा, १५९.**कुशलगढ :** पं.श्री प्रितेश जैन, १६०.**लूणदा :** पं.श्री स्वतंत्र जैन, १६१.**सिकरी :** पं.श्री आकाश जैन, १६२.**बोहेडा :** पं.श्री संभव जैन, १६३.**जयथल :** पं.श्री शशांक जैन, १६४.**लवाण :** पं.श्री अंचलप्रकाश जैन, १६५.**इटावा :** पं.श्री नवीनजी शास्त्री बरा, १६६.**नौगाँवा** : पं. श्री शीतलजी शास्त्री, १६७. **उदयपुर** : पं. श्री हीराचन्दजी अखावत, १६८.**श्रीमहावीरजी:** श्री संजयजी जैन, खनियाँधाना।

*मध्यप्रदेश प्रान्त* : १६९. **सागर(मकरोनीया):** पं.श्री बाबुभाईजी मेहता, फतेपुर १७०. **भोपाल(महावीरनगर):** पं.श्री कैलाशचंदजी 'अचल' शास्त्री, ललितपुर, १७१.**रीवा:** पं.श्री सौरभजी शास्त्री, फिरोजाबाद, १७२. **गुना (मु. मण्डल) :** पं.श्री श्रेंयासकुमारजी शास्त्री, जयपुर, १७३. **गुना(शां. मंदिर):** पं.श्री सुरेशचंदजी सिंघई, भोपाल, १७४.**ग्वालियर (सीमन्धर जिनालय) :** पं.श्री अजितकुमारजी जैन, १७५.**इन्दौर(रामचंद्रनगर):** पं.श्री चन्दुभाईजी मेहता, फतेपुर, १७६.**इन्दौर(साधनानगर):** पं.श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, बिजौलीया, १७७.**ग्वालियर (मुरार) :** पं.श्री सुनीलजी शास्त्री, १७८. **इन्दौर(देवास रोड):** पं.बाबूलालजी पल्लीवाल, गुना १७९. **इन्दौर(रामा.मंदिर) :** पं.श्री वीरचंदजी जैन, हजारीबाग १८०. **इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.श्री ऋषभकुमारजी शास्त्री, अहमदाबाद १८१. **इन्दौर (नन्दानगर) :** पं.श्री दीपकजी जैन, झूमरीतलैया १८२.**इन्दौर(माणक चौक) :** पं.श्री अमितजी शास्त्री, जबेरा १८३. **द्रोणगिरी :** पं.श्री दिनेशभाईजी शहा, मुंबई १८४. **द्रोणगिरी :** विदुषी डॉ.उज्ज्वलाजी शहा, मुंबई १८५.**आरोन :** विदुषी कल्पनाजी जैन, सागर १८६.**भिण्ड(परमागम) :** पं.श्री गुलाबचंदजी जैन, बीना १८७.**भिण्ड (देवनगर):** पं.श्री हुकमचंदजी सिंघई, राधौगढ १८८. **खुरई :** पं.श्री कोमलचंदजी जैन, टडा १८९.**अशोकनगर :** पं.श्री प्रद्युम्नकुमारजी जैन, मुजफ्फरनगर १९०.**छिंदवाडा :** पं.श्री संजयकुमारजी जैन, नागपुर १९१. **भोपाल (चौक बाजार) :** पं.श्री संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर १९२.**भोपाल (पिपलानी) :** पं.श्री महेन्द्रजी जैन भिण्ड १९३.**ग्वालियर(सोडे कुआँ) :** पं.श्रीअजीतकुमारजी जैन, ग्वालियर १९४. **ग्वालियर(लश्कर) :** पं.श्री महेशचंदजी जैन, ग्वालियर १९५.**रतलाम :** पं.श्री पद्मकुमारजी अजमेरा, उज्जैन १९६. **लुकवासा :** पं.श्री केवलचंदजी जैन, गुना १९७.**मौ :** पं.श्री गुलाबचंदजी जैन, भोपाल १९८. **कोलारस :** पं.श्री नंदकिशोरजी गोयल, विदिशा १९९.**उज्जैन :** पं.श्री विक्रान्तकुमारजी शहा, सोलापुर २००. **मण्डला :** पं.श्री शिखरचंदजी जैन, सिवनी २०१.**बेगमगंज :** पं.श्री विमलकुमारजी जैन, जलेसर २०२. **बडवानी :** विदुषी पुष्पाबहनजी, खण्डवा २०३.**केसली :** पं.श्री रूपचंदजी जैन, बण्डा २०४.**निसई(तारण तरण):** पं.श्री देवेन्द्रकुमारजी जैन, सिंगोडी २०५.**शुजालपुर सिटी :** पं.श्री सिद्धार्थजी दोशी, रतलाम २०६.**शाहपुर :** पं.श्री बाबूलालजी बांझल, गुना २०७. **फुटेरा :** पं.श्री सुगनचंदजी जैन, गुना २०८. **खनियांधाना :** पं.श्री अशोकजी जैन, सिरसागंज २०९.**शाहगढ :** पं.श्री अजीतकुमारजी जैन, फिरोजाबाद २१०. **विदिशा(माधवगंज):** पं.श्री कमलकुमारजी जैन, पिडावा २११.**रांझी:** पं.श्री निलयजी शास्त्री, टीकमगढ़ २१२.**लोहारदा :** पं.श्री शांतीलालजी सोगानी, महीदपुर २१३.**बडनगर :**

पं.श्री अनिलकुमारजी पाटोदी, बडनगर २१४.**जावरा:** पं.श्री चन्दुभाईजी जैन, कुशलगढ २१५.**अकाझिरी :** पं.श्री सरदारमलजी जैन, बेरसिया २१६.**अमायन :** पं.डॉ. दीपकजी जैन शास्त्री, जयपुर २१७.**सागर(गौरमूर्ती):** पं.श्री अनिलकुमारजी शास्त्री, भिण्ड् २१८.**करेली :** पं.श्री सतीशचंदजी जैन, पिपरई, २१९.**सिवनी :** पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, पिपरई् २२०.**धरमपुरी :** पं.श्री संजयजी सेठी, जयपुर २२१.**भोपाल(कोहेफीजा) :** पं.श्री योगेशजी शास्त्री, बरा २२२. **इन्दौर (शक्करबाजार) :** पं.श्री रीतेशकुमारजी जैन, सनावद २२३. **विदिशा :** पं.श्री नितिन जैन, बडकुल २२४. **शहडोल :** पं.श्री सुदीपजी शास्त्री, बासवांडा २२५. **विजयपुर :** पं.श्री संतोषजी साहुजी, अंबड २२६. **दुर्ग :** पं.श्री अनिश जैन, छिंदवाडा २२७. **निसई :** पं.श्री कपूरचंदजी समैय्या २२८. **भीतरवार :** पं.ब्र. रमेशजी जैन, भोपाल २२९. **बडामलहरा :** पं.श्री मुरारीलालजी, नरवर २३०. **उज्जैन :** पं.श्री बेलजीभाई शाह २३१. **कटनी :** पं.श्री संतोषजी शास्त्री, दमोह २३२. **टीकमगढ :** विदुषी मीनाबहनजी २३३. **टीकमगढ :** विदुषी ममताबहनजी २३४. **छिंदवाडा :** पं.श्री ऋषभजी शास्त्री, छिंदवाडा २३५. **ग्यारसपुर :** पं.श्री राजेशजी शास्त्री, विदिशा २३६. **गंजबासौदा :** पं.श्री संजीवजी शास्त्री, इन्दौर २३७. **अशोकनगर :** पं.श्री अमोलकचंदजी जैन २३८. **लोहारदा :** पं.श्री छगनलालजी जैन २३९. **सिवनी :** पं.श्री के. सी. भारिल्लजी २४०. **बीना :** पं. श्री राजेशजी जैन २४१. **भोपाल :** पं.श्री राजमलजी पवैय्या २४२. **इटारसी :** पं.श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन, अमरपाटन २४३. **निसइ :** पं.श्री कपूरचंदजी समैय्या २४४. **भोपाल :** पं.श्री महेशचंदजी जैन, गुढा २४५. **घोडाडोंगरी :** पं.श्री सुरेशचंदजी जैन २४६. **दलपतपुर :** पं.श्री निखिलेशजी शास्त्री २४७. **भिण्ड :** पं.श्री उदयमणिजी शास्त्री २४८. **बेरी :** पं.श्री माणिकचंदजी जैन २४९. **भोपाल :** पं.श्री अनुरागजी शास्त्री २५०. **पथरिया :** पं.श्री नेमीचंदजी जैन २५१. **महीदपुर :** पं.श्री सतीशजी कासलीवाल २५२. **दलपतपुर :** पं.श्री अरूणजी मोदी शास्त्री २५३. **जावरा :** पं.श्री हीरालालजी गंगवाल २५४. **बीना :** पं.श्री लखमीचंदजी जैन २५५. **बीना :** पं.श्री मोतीलालजी जैन २५६. **इंदौर :** पं.श्री कान्तीकुमारजी पाटनी २५७. **इंदौर :** पं.श्री विमलप्रकाशजी अजमेरा २५८. **अशोकनगर :** पं.श्री अरूणकुमारजी लालोनी २५९. **ग्वालियर(गंज) :** पं.श्री धनेन्द्रजी सिंघल २६०. **खनियाधांना :** पं.श्री ताराचंदजी पटवारी २६१. **खनियांधाना :** पं.श्री संजयजी जैन, शास्त्री २६२. **ग्वालियर(मुरार) :** पं.श्री सुनिलजी जैन २६३. **गुना :** पं.श्री मांगीलालजी जैन २६४. **बीना बजरीया :** पं.श्री सत्येंद्रजी जैन २६५. **बदरवास :** पं.श्री अभयकुमारजी जैन २६६. **विदिशा :** पं.श्री जवाहरलालजी बडकुल २६७. **अशोकनगर :** पं.श्री विमलजी जैन २६८.**कालापीपल :** पं.श्री महेन्द्रजी सेठी २६९.**अंबाह :** पं.श्री नयनेशजी शास्त्री, ओबरी २७०. **मल्हारगढ :** पं.श्री निकलंकजी शास्त्री, कोटा २७१. **मगरौन :** पं.श्री संदीपजी शास्त्री, विनौता २७२. **तांखला :** पं.श्री रविजी शास्त्री, पिडावा २७३. **अंबाह :** पं. प्रक्षालजी शास्त्री, उदयपुर २७४. **अमरकोट :** अजितजी शास्त्री, मौ २७५. **गढाकोटा :** पं.श्री अनुपम जैन, अमायन २७६. **सुजालपुर मण्डी :** पं.श्री अभिषेक जैन, सिलवानी २७७. **बण्डा :** पं.श्री आशीष जैन, जबेरा २७८. **मंदसौर :** पं.श्री अजित जैन, गडखेडा २७९. **सिंगोडी :** पं.श्री दीपेश जैन, गुढा २८०. **गौरझामर :** पं.श्री जितेन्द्र जैन, सिंगोली २८१. **करैरा :** पं.श्री जितेन्द्र जैन, खडैरी २८२. **मक्सी :** पं.श्री जितेंद्र यादव, बानपुर २८३. **कुचडौद :** पं.श्री राहुल जैन, बदरवास २८४. **बेडीया :** पं.श्री चैतन्य जैन, खडैरी २८५. **चंदेरा :** पं.श्री नयनेश जैन, ओबरी २८६. **हरसूद :** पं.श्री भरत जैन २८७. **सनावद :** पं.श्री आशीष शास्त्री विनौता २८८. **रहली :** पं.श्री अनुराज जैन २८९. **कर्रापुर :** पं.श्री आदित्य जैन २९०. **कालापीपल** : पं.श्री नितेंद्र जैन।

*उत्तर प्रदेश प्रान्त :* २९१.**रूडकी :** पं.श्री लालारामजी साहू, अशोकनगर २९२.**धामपुर :** पं.श्री मनोजजी जैन, मुजफ्फरनगर २९३.**एत्मादपुर :** पं.श्री भागचंदजी जैन, पथरिया २९४.**बागपत :** पं.श्री गोकुलचंदजी सरोज, ललितपुर २९५.**सुल्तानपुर :** पं.श्री सलेखचंदजी जैन, शामली २९६.**मुजफ्फरनगर :** पं.श्री विनोदकुमारजी जैन, गुना २९७.**कुरावली :** पं.श्री नागेशजी जैन, पिडावा २९८.**आगरा(ताजगंज):** पं.श्री अरूणकुमारजी मडवैय्या २९९.**डांडा इटावा :** पं.श्री अजीतकुमारजी जैन, मडावरा ३००.**ललितपुर :** पं.श्री अनुभवप्रकाशजी शास्त्री, कानपुर ३०१.**मैनपुरी:** विदुषी ब्र. सुधाबहनजी, छिंदवाडा ३०२.**मेरठ(तीरगरान):** पं.श्री निर्मलजी जैन, सागर ३०३.**रानीपुर :** पं.श्री ललितकुमारजी शास्त्री, बण्डा ३०४.**आगरा (नमकमण्डी):** पं.श्री ऋषभकुमारजी शास्त्री, ललितपुर ३०५**कानपुर (सर्राफा चौक):** पं.श्री अनिलकुमारजी धवल शास्त्री, भोपाल ३०६. **कानपुर (कारवालोनगर):** पं.श्री अरविंदजी शास्त्री, टीकमगढ ३०७. **कानपुर(कराची खाना):** पं.श्री जिनेंद्रकुमारजी शास्त्री, उदयपुर ३०८. **गन्नौर(सोनीपत):** पं.श्री महेशचंदजी जैन, भोपाल ३०९. **फिरोजाबाद :** पं.श्री विजय यादव, बानपुर, ३१० **खतौली :** पं.श्री कल्पेन्द्रजी जैन ३११ **ललितपुर :** पं.श्री भानुकुमारजी शास्त्री ३१२. **सुल्तानपुर :** पं.श्री देवचंदजी जैन ३१३. **खतौली :** पं.श्री सोनूजी पाण्डे शास्त्री ३१४. **खतौली :** पं.श्री ज्ञायकजी शास्त्री, राजकोट, ३१५. **सकीट :** पं.श्री कस्तुरचंदजी शास्त्री, खडैरी ,३१६. **खतौली:** पं.श्री पराग महाजन, कारंजा, ३१७. **बाह :** पं.श्री दीपकजी डांगे, ३१८. **बडौत :** पं.श्री सुनीलजी बेलोकर, सुल्तानपुर, ३१९. **कासगंज :** पं.श्री विशालजी सर्राफ, नासिक, ३२०. **गंगेरू :** पं.श्री अभिषेकजी शास्त्री, रहली, ३२१. **अमरोहा :** पं.श्री नीरजजी खडेरी, ३२२. **शिकोहाबाद :** पं. चेतन जैन खड़ैरी, ३२३. **गंगेरू :** पं. सुरेश काले, राजुरा, ३२४. **बानपुर :** पं. जिनेश जैन, खैरागढ, ३२५. **कायमगंज** : पं. श्री रवीशजी गाँधी, घाटोल, ३२६. **बागपत** : पं. श्री शीतलजी आलमान, ३२७. **करहल** : पं. श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन, ३२८. **करहल** : रमेशचन्दजी जैन, ३२९. **डांडा इटावा** : पं. श्री हुकमचन्दजी जैन, ३३०. **बडौत** : पं. श्री शिखरचन्दजी जैन, ३३१.**घिरोर** : पं. श्री शोभालालजी जैन, ३३२. **सिरसागंज** : पं. पवनजी शास्त्री, मौ., ३३३. **करहल** : पं. श्री अरविन्दजी जैन।

*गुजरात प्रान्त :* ३३४. **अहमदाबाद(नवरंगपुरा):** पं.श्री सुरेन्द्रकुमारजी जैन, उज्जैन ३३५. **अहमदाबाद (बहे. पुरा):** पं.श्री सुरेशजी जैन,टीकमगढ़ ३३६. **अहमदाबाद(पालडी):** पं.श्री मेहुलकुमारजी मेहता शास्त्री, कोलकाता ३३७. **अहमदाबाद(मणिनगर):** पं.श्री मनोजकुमारजी शास्त्री, डडूका ३३८. **अहमदाबाद(न्यू जैन):** पं.श्री प्रवेशकुमारजी भारिल्ल, करेली ३३९. **अहमदाबाद(ओढोव):** पं.श्री रमणभाईजी दोशी, तलोद ३४०. **अहमदाबाद(बापूनगर):** पं.श्री शिखरचंदजी जैन, विदिशा ३४१. **अहमदाबाद(आ. नगर):** विदुषी राजकुमारीजी जैन, जयपुर ३४२. **हिम्मतनगर :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी, उज्जैन ३४३. **हिम्मतनगर :** विदुषी पुष्पाजी झांझरी, उज्जैन ३४४. **दाहोद :** पं.श्री दिलीपकुमारजी बाकलीवाल, इन्दौर ३४५. **पोरबंदर :** पं.ब्र. सुकुमालजी झांझरी, उज्जैन ३४६. **तलोद :** पं.श्री श्रेणिकजी जैन, जबलपुर ३४७. **मोरबी :** पं.श्री चेतनजी शास्त्री, कोटा

**३४८. रखियाल :** पं.श्री शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, मौ **३४९. बडोदरा :** पं.श्री श्रेंयासकुमारजी शास्त्री, जबलपुर **३५०. वापी :** पं.श्री आशीषकुमारजी शास्त्री, टीकमगढ, **३५१. जेतपुर :** पं. राहुल जैन बिनौता, **३५२. सरसपुर :** पं. शाकुल जैन, **३५३. अहमदाबाद** : पं. श्री दीपचन्दजी जैन, **३५४. मोरवी** : पं. श्री इन्दुभाई सिंघवी, **३५५. हिम्मतनगर** : पं. श्री मिठाभाईजी दोशी।

*अन्य प्रान्त :* **३५६. कोलकाता :** पं.श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन, आगरा **३५७. कोलकाता :** पं.ब्र. हेमचंदजी हेम, देवलाली **३५८. हिसार :** पं.श्री वीरेन्द्रकुमारजी वीर, फिरोजाबाद **३५९. सिंकदराबाद :** पं.श्री हेमन्तजी बेलोकर, ढासाला **३६०. चेन्नई :** पं.श्री सुगनमलजी लोढा, जयपुर **३६१. सरिया :** पं.श्री रतनचंदजी शास्त्री, कोटा **३६२. पेटरवार :** पं.श्री प्रशांतजी मोहरे शास्त्री, सोलापुर **३६३. बेलगाँव :** पं.श्री कस्तूरचंदजी जैन, विदिशा **३६४. एर्नाकुलम :** पं.श्री गजेन्द्रजी शास्त्री, बड़ामलहरा **३६५. चेन्नई :** पं.श्री सुभाषजी शास्त्री **३६६. बेंगलोर :** पं.श्री किशोरजी शास्त्री **३६७. कनकगिरी :** पं.श्री नाभिराजनजी शास्त्री **३६८. चम्पापुर :** पं.श्री मनीष जैन शास्त्री, खडैरी **३६९. भागलपुर :** पं.श्री जागेशजी शास्त्री, जबेरा **३७०. चेन्नई :** पं.श्री ए. बालाजी, शास्त्री।

*पूर्वी दिल्ली :* **३७१. शिवाजी पार्क :** पं. महेन्द्रचन्दजी जैन कानपुर, **३७२. पाण्डवनगर :** सत्येन्द्रमोहन जैन, पड़पड़गंज, **३७३. दिलसाज गार्डन :** पं. विकास जैन, नवीन शाहदरा, **३७४. न्यूलाहौर (शास्त्रीनगर):** पं. अशोक शास्त्री दिलशाज गार्डन, **३७५. पड़पड़गंज गांव :** पं. प्रकाशचन्दजी जैन मैनपुरी, **३७६. पार्श्व विहार :** पं. ऋषभजी जैन शास्त्री उस्मानपुर, **३७७. शंकरनगर :** डॉ. अशोक जैन चन्द्रविहार, **३७८. अशोकनगर:** पं. अमित जैन शाहदरा।

*पश्चिमी दिल्ली :* **३७९. लारेंस रोड :** पं. आशीष शास्त्री भिण्ड **३८०. पुंष्पांजलि एन्क.:** पं. संदीप शास्त्री बांसवाड़ा, **३८१. पालम गांव :** पं. अविरल शास्त्री विदिशा, **३८२. आत्मार्थी ट्रस्ट :** पं. धनसिंहजी जैन पिड़ावा एवं पं. मनीष शास्त्री नकुड़, **३८२. जनकपुरी सी–२** : पं. मिश्रीलालजी खनियॉधाना, **३८३. नांगलोई :** पं. कस्तूरचन्दजी बजाज भोपाल, **३८४. वल्लभविहार (रोहिणी):** प्रमोद शास्त्री शाहगढ, **३८५. सुंदरविहार :** पं. श्रेयांस शास्त्री अभाना, **३८६. मिलापनगर :** पं. नितिन जैन नांगलराय।

*मध्य दिल्ली :* **३८७. अशोकविहार फेज–१ :** पं. सुनील धवल भोपाल, **३८८. (पहाड़गंज):** पं. सुरेशचन्द जैन कोलारस, **३८९. शंकररोड (राजेन्द्रनगर) :** डॉ. वीरसागर जैन, **३९०. भारत नगर :** पं. पंकज शास्त्री खड़ैरी, **३९१. राजा बाजार :** डॉ. राजेन्द्र बंसल अमलाई, **३९२. वेदवाड़ा :** पं. संदीप जैन शास्त्री छतरपुर, **३९३. वालाश्रम (दरियागंज):** पं. मनीष शास्त्री 'कहान' खड़ैरी, **३९४. शक्तिनगर :** पं. संजीव जैन उस्मानपुर, **३९५. धरमपुरा :** पं. मनोज जैन शास्त्री पार्क, **३९६. सीताराम बाजार :** पं. सुशील जैन शास्त्री भोपाल, 3९७. **सब्जीमण्डी (आर्यपुरा):** पं. राकेश जैन शास्त्री दिल्ली

*दक्षिणी दिल्ली/बाहरी क्षेत्र :* **३९८. गोविन्दपुरी :** पं. आशीष शास्त्री विदिशा, **३९९. भोगल :** डॉ. अशोक जैन दिल्ली, **४००. बहादुरगढ (हरियाणा):** विदुषी कुसुमलता जैन खनियॉधाना, **४०१. झज्जर (हरियाणा):** पं. अभिनव शास्त्री जबलपुर, **४०२. फरीदाबाद (हरिसाणा) :** पं. मांगीलालजी कोलारस, **४०३. बलरामनगर (उ.प्र.):** पं. अमित जैन दिल्ली, **४०४. सरधना (उ.प्र.):** पं. मोतीलालजी करेली, **४०५. खेकड़ा (उ.प्र.):** डॉ. मुकेश शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, **406. रोहतक (हरियाणा):** डॉ. महावीप्रसाद जैन टोकर।